P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-8* April- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

राजस्थान के इतिहास लेखन में ख्यात ग्रन्थों की उपयोगिता

अनिला पुरोहित
सह आचार्य,
इतिहास विभाग,
राजकीय डूंगर महाविद्यालय,
बीकानेर, राजस्थान

इन्द्रा विश्नोई
सह आचार्य,
दर्शनशास्त्र विभाग,
राजकीय डूंगर महाविद्यालय,
बीकानेर, राजस्थान

चन्दा आसेरी
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
राजकीय डूंगर महाविद्यालय,
बीकानेर, राजस्थान

सारांश

राजस्थानी भाषा की विकास यात्रा का अध्ययन करने से पता चलता है कि इस साहित्य के विषय वस्तु के केन्द्र में प्रमुखतः ऐतिहासिक पात्र एवं घटनाएं ही रहीं, इसलिये साहित्य इतिहास की समृद्ध परम्परा एवं राजस्थानी भाषा की विकास यात्रा को दो समलम्ब रेखाओं के चित्र में प्रदर्शित कर सकते हैं।[1] ख्यातों में इतिहास बोध का अंतिम बिन्दु उसकी विषयवस्तु के विभिन्न तत्वों से सम्बन्धित है। यथा–स्रोतों प्रयोग, उनका उल्लेख, राजनीतिक, सामाजिक अतीत का वर्णन एवं व्याख्या आदि।[2] ख्यातों की रचना का आधार सर्वदा– प्राचीन बहिया, पट्टे परवाने ताम्रपत्र, विभिन्न कवियां आदि की रचनाएं, जनश्रुति एवं याद्दाश्त रहे। उस समय तक पुरातात्विक सामग्री का उपयोग इतिहास लेखन में सम्भवतः इस क्षेत्र में देखने में नहीं आता था अतः उपलब्ध स्रोत ये ही थे, और इन्हीं के आधार पर ख्यातों में सम्बन्धित विषय का वर्णन किया जाता था।

मुख्य शब्द : ख्यात, साहित्य, राजस्थान।

प्रस्तावना

इतिहास के प्रथम व्याख्याता यूनानी विद्वान हिरोदोतस (545–456 बी. सी.) ने इतिहास को खोज गवेषणा या अनुसंधान के अर्थ में ग्रहण करते हुए इसके चार लक्षण निर्धारित किये थे, एक तो यह कि इतिहास वैज्ञानिक विधा है, अतः इसकी पद्धति आलोचनात्मक होती है, दूसरे यह मानव जाति संबंधित होने के कारण मानवीय विधा (मानविकी) है। तीसरे यह तर्कसंगत विधा है, अतः इसमें तथ्य और निष्कर्ष प्रमाण पर आधारित होते हैं। चौथे यह अतीत के आलोक में भविष्य पर प्रकाश डालता है, अतः यह शिक्षाप्रद विधा है। इतिहासकार ट्वायनबी लिखते हैं कि यदि 'ईलियड' को कोई इतिहास के रूप में पढ़ना चाहे तो उसे वह हानियों से भरा मिलेगा और यदि कोई कथा के रूप में पढ़ना प्रारम्भ करे तो उसमें उसे इतिहास ही इतिहास मिलेगा।राजस्थानी साहित्य की इतिहास संदर्भित विधा का विकास सोलहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में हुआ जिसे यहां के रचनाकारों ने आगे चलकर 'ख्यात' नाम दिया। यद्यपि 'वात', विगत, वंशावली, हाल, हकीकत, रासो, विलास, प्रकास, वचनिका आदि विधाएं भी राजस्थानी साहित्य में इतिहास का प्रतिनिधित्व कर रही थी परन्तु ख्यात इतिहास के संदर्भ में इन सबका अधिक परिष्कृत एवं विकसित रूप था। ख्यात शब्द मूलतः संस्कृत का शब्द है। ***ख्या*** धातु में ***'क्त'*** प्रत्यय जुड़ने से ख्यात शब्द बना है जिसका अर्थ है भूतकाल की घटनाओं का वर्णन एवं भूतकाल को ज्ञात करना।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध कार्य का उद्देश्य इतिहासविदों एवं शोधार्थियों को ख्यात साहित्य की परम्परा एवं विकास, इतिहास लेखन में अवदान तथा जोधपुर, बीकानेर, जयपुर, जैसलमेर, उदयपुर तथा राजस्थान के अन्य क्षेत्रों के इतिहास लेखन में ख्यात ग्रन्थों की उपयोगिता से भलीभांति अवगत करवाना है। इस शोध कार्य को वर्ष 2016 एवं 2017 में सम्पन्न किया गया है।

साहित्यावलोकन

जैसलमेर की ख्यात

राजस्थान के इतिहास लेखन के जितने भी प्राचीन और नवीन प्रयास हुए हैं, उनमें जैसलमेर के इतिहास पर अति अल्प प्रकाश डाला गया है। प्राचीन ग्रन्थों की दृष्टि से मुहणोत नैणसी की ख्यात महत्वपूर्ण है परन्तु उसमें जैसलमेर का क्रमबद्ध इतिहास नहीं है। कुछ विशिष्ट जन प्रसिद्धि शासकों व ठिकानेदारों के संबंध में ही ऐतिहासिक बातें संकलित की गई है। कर्नल राड ने भी अपने राजस्थान में जैसलमेर पर संक्षेप में ही प्रकाश डाला है। ओझाजी ने जैसलमेर का अलग से इतिहास नहीं लिखा अतः जोधपुर तथा बीकानेर आदि

राज्यों के इतिहास के संदर्भ से ही जैसलमेर की तवारीख में भी प्रारम्भ में दिया गया इतिहास का अंश संक्षिप्त ही है और बाद में ही अन्य जानकारी प्रस्तुत की गई हैं। जैसलमेर भारत की उत्तर पश्चिम सीमा पर पड़ता है और प्रायः जो मुगल आक्रान्ताओं के हमले भारत पर हुए है उन्होनें जैसलमेर को सबसे पहले प्रभवित किया है। जैसलमेर के शासकों ने उनका असाधारण मुकाबला भी किया और अनेक बार उन्हें पीछे खदेड़ने मे भी सफल हुए हैं। इसीलियं उन्हें उत्तर भड़ किवाड़ कहा गया है। प्रस्तुत ख्यात के अनुसार जैसलमेर गढ़ की स्थापना राव जैसलमेर ने की थी, इससे पहले इस इलाके की राजधानियां तनोट, लोद्रवा आदि स्थानों पर रही। ख्यात से यह भली–भांति ज्ञात होता है कि जैसलमेर की स्थापना के पहले के काल में यहां के भाटी शासकों में बड़े प्रल प्रशांत शासक हो चुके हैं और उनका वर्चस्व उस काल के अक्रान्ताओं ने भी माना है। ख्यात में प्रत्येक शासक के वैवाहित सम्बन्धों की विस्तृत जानकारी दी गई है इससे उस सयम के प्राचीन राजवंशों, शासकों के नाम और उनके स्वान आदि के संबंध में महत्वपूर्ण संकेत मिलते हैं जो कि अन्य स्थानों के इतिहास लिखने में भी सहायक सिद्ध हो सकते है।। जैसलमेर री ख्यात में प्रथम की आदि नारायण, तिण रो कंवल, तिण रौ ब्रह्म, तिण सौ अत्रि, तिण रौ सोम, तिण रौ बुध आदि प्रमुख हैं।[3,4]

जोधपुर, बीकानेर और किशनगढ़ का वृतांत

जोधपुर के राजाओं की वंशावली

राव सीहा

राणा सोलंकणी सिद्धराव जयसिंह की बेटी, उसका पुत्र आस्थान। दूसरी राणी चावड़ी सौभाग्यदेवी, मूलराज बाघनाथोत की बेटी, उसके पुत्र अज व सोनिंग।

राव आस्थान

राणी उछरंग इंदी, बूढ़म मेघराजोत की बेटी, उसके पुत्र धूहड़, धांधल व चाचग।

राव धूहड़

राणी द्रौपदी, चह्वाण लक्ष्मणसेन प्रेमसेनोत की बेटी, उसके पुत्र रायपाल, पीथड़, बाघमार, कीर्तिपाल और लगहंथ।

राव रायपाल

राणी रत्नादेवी भटियाणी, रावल हुसाजोत की बेटी, उसके पुत्र– कान्ह, समणा, लक्ष्मणसेन व सहनपाल।

राव कान्हा या कन्हपाल

राणी कल्याणी देवी देवड़ी सलखा लूंभावत की बेटी, उसके पुत्र जालणसी और विजयपाल।

राव जालणसी

राणी स्वरूपदेवी गोहिलाणी, गोदा गजसिंह जोत की बेटी, उसका पुत्र छाड़ा।

राव छाड़ा

राणी बीरां हुलणी, उसका पुत्र टीडा।

राव टीडा

राणी तारादेवी, चह्वाण राणा बरजांगोत की बेटी, पुत्र सलखा।

राव सलखा

राणी देवी चहुवाण मुंजपाल हेमराजोत की बेटी, पुत्र मल्लिनाथ, जैतमाल।

जोधपुर और बीकानेर की ख्यात

ख्यात में यहां के शासकों के जीवन परिचय, सैनिक अभियानों, सन्धि–समझौतों, ठिकानेदारों की भूमिका, केन्द्र सत्ता और पड़ौसी राज्यों के साथ संबंधों, कला और साहित्य आदि रचनात्मक कार्यों और उत्सव आदि सांस्कृतिक आयोजनों का विस्तृत और सटीक वर्णन होने के फलस्वरूप इतिहास के आधारभूत स्त्रोत के रूप में इनकी उपयोगिता सिद्ध हुई है। इसके बाद फिर राजवंशों का क्रमबद्ध इतिहास ख्यात ग्रन्थों में लिपिबद्ध किये जाने का मार्ग प्रशस्त हुआ तथा 'उदयभांण चांपावत री ख्यात', 'राठौड़ां री ख्यात' (जोधपुर) 'बीकानेर राठौड़ा री ख्यात', 'कछवाही री ख्यात', 'जैसलमेर री ख्यात' आदि अनेक ख्यात ग्रन्थों का प्रणयन हुआ।[5,6]

राजस्थान के जोधपुर व बीकानेर में ख्यात ग्रन्थों का खजाना रहा है। अधिकांश ख्यातें यहां के राजघरानों से जुड़े अधिकारियों और विद्वानों द्वारा लिखी गयी हैं। एक ओर जहां जोधपुर के महाराजा मानसिंह (1803–1843 ई.) के आदेश से आईदान खिडिया ने 'जोधपुर राठौड़ा री ख्यात' लिखी वहीं दूसरी ओर बीकानेर महाराजा सरदारसिंह (1853–1872 ई.) की आज्ञा से दयालदास सिढ़ायच ने 'बीकानेर राठौड़ री ख्यात' लिखी। आलोन्टस ख्यात में घटनाओं का विवरण इस प्रकार है–

महाराजा ईसासिंघनी आपसे वृक्षपणों जोण उषाका वंस मैं राज सदा थिर रहै, इसी सला बामंण मैं पूछी। जद पिंडता अरज करी राजय पुण्य कीयां आपतो स्वर्ग गया। काती पद समत 1013 के वरस पछै राजतिलक सौदेदेवजी ने हुवौ। अब ई ब्यात में आकां की रामजोतरी आ छै। राजावां को उमराबां को तोल नीकां समडयो जाय ई वास्ते बकबी छै।

बीकानेर की ख्यात में महाराजा सुजानसिंह, महाराजा जोरावर सिंह, महाराजा गजसिंह, महाराजा सूरतसिंह तथा महाराजा रतनसिंह की ख्यात प्रमुख है।[7–11]

उदयपुर की ख्यात

दीवाण (मेवाड़ के महाराणा) की धरती का विगत कोस और दिशा से

वायव्य कोण में उत्तर से बांई तरफ मारवाड़, अजमेर से कोस 60 ब्यावर राणा की, समेल खापरा (बाबरा) अजमेर का, मानपुरका घाटा, सारण, घाटावल, जहाजपुर से सीमा मिलती है। रामपुरे से कोस 45 तथा 50 तक सीमा– पूर्व से दाहिनी कोण गांव जारोड़ा रामपुरे का, देवलिये से कोस 5 बीच में छोटा गांव, भैंसरोड़ दीवाण का गांव धीरावद (धरियावद), आगे देवलिया से कोस 5 बीच में छोटा गांव, भैंसरोड़ दीवाण की, और बून्दी कोस 65 तथा 70, पूर्व से कुछ बांई ओर मन्दसोर की तरफ सीमा कोस 25 तथा 27, दक्षिण से बांई तरफ रूपरास, मीमच (नीमच) दीवाण की, लीखमडी दसोर (मन्दसोर) की। डुंगरपुर से सीमा कोस 19 दक्षिण खरक की ओर सोमनदी सीमा कोस 19।सलूम्बर सेवाड़ी आसपुर, ईडर से कोस 30 खरक (ईशान) कोण में पानरवा भीलों के मेवास राणा के, गांव छाली राणा की, दलोला ईडर की। डूंगरपुर बांसवाड़ा बीच जवास भीलों का मेवास है सो राणा के अधीन है सिरोही से सीमा कोस 25 पश्चिम और बांसवाड़ा उदयपुर से कोस 40, बीच डुंगरपुर, कांकडद्ध

(सीमा) नहीं। ईडर उदयुपर से 50 कोस, इन मार्ग में 9 कोस मूसी–गडिया, 3 कोस चन्दवासा, 4 आहोर, 8 भीमका ओड़ा, 7 पानोरा (पानरवा) भीलों का, 9 छाली पूतली राणी की, 3 दलोल कलोल ईडर। उदयपुर की हवेली के निकट के गांवों का सीआली साख (खरीफ)का हासिल तीसरे हिस्से तक और उन्होली (रबी) में आधा, जिसके तीन विभाग होते है।[12–14]

जयपुर की ख्यात

अथ कछवावां री वंसावली ख्यात प्रवाडा सुधी लिष्यते।

दोहा

राहीतास सुं कालवी, नरवंर सूं गवालेर।
वसधौ सै कुरम प्रभु आया फिर आबेर।।

जयपुर की ख्यातों में वीजलदै, केलणदे, कुतलदे, जीणसीदे, उदयकरण, महाराजा वणवीर, महाराजा चंद्ररोण, महाराजा पृथ्वीराज, महाराजा भगवत दास, महाराजा मामसिंह, महाराजा भावसिंह, महाराजा जय सिंह (मिर्जा राजा), महाराजा बिवससिंह, महाराजा सवाई जयसिंह तथा महाराजा ईसरीसिंह, महाराजा माधोसिंह, महाराजा पृथ्वीसिंह, महाराजा प्रतापसिंघ, महाराजा जतगतसिंघजी, महाराजा जयसिंघ तृतीय, महाराजा रामसिंह द्वितीय तथा कच्छावा री वंशावली आदि प्रमुख हैं।[13:15]

निष्कर्ष

इस शोध कार्य से यह स्पष्ट होता है कि ख्यातों की रचना मुख्य रूप से या तो रचनाकारों की व्यक्तिगत रूचि पर किये गए सामग्री संकल के आधार पर हुई या फिर राज्याश्रय में रहकर राज्यादेश के माध्यम से हुई। यद्यपि लगभग सभी ख्यातकार किसी न किसी रूप में राज्य या प्रशासन से जुड़े हुए थे लेकिन सभी का उद्देश्य शासक या वंश का गौरव वर्णन करना नहीं था। कुछ रचनाकारों ने व्यक्तिगत रूचि के कारण निजी संग्रह के लिये भी ख्यातों की रचना की थी। दूसरे प्रकार की ख्यातें जो राज्याश्रय में लिखी गई जिनमें कि संबंधित शासक या वंश का गौरवपूर्ण इतिहास लिखा गया था। जहां तक राज्याश्रय मे रचित ख्यातों का प्रश्न है तो उसमें रचनाकारों ने अपने आश्रयदाताओं की मान मर्यादाओं का ध्यान अवश्य रखा और ऐसे तथ्य जो कि उनके मान सम्मान में कमी ला सकते थे उन्हें छोड़ दिया या उनका स्वरूप बदल दिया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *राठौड़ां री ख्यात, कैलाश दान उज्जवल, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1999*
2. *मारवाड़ री ख्यात, डॉ. हुकम सिंह भाटी, राजस्थानी शोध संस्थान, चोपासनी, जोधपुर, 2000*
3. *मुंहता नैणसी कृत मुंहता नैणसी री ख्यात (भाग–1,2,3), आचार्य बद्रीप्रसाद साकरिया, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधुपर, 1984, 1962, 1993 क्रमशः*
4. *मुंहता नैणसी कृत मारवाड़ रा परगना री विगत (भाग–1,2,3), डॉ. नारायण सिंह भाटी, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1960,1962,1964 क्रमशः*
5. *जोधपुर राज्य री ख्यात, डॉ. रघुवीर सिंह, डॉ. मनोहर सिंह राणावत, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, 1988.*
6. *महाराजा मानसिंघ री ख्यात, डॉ. नारायण सिंह भाटी, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1989।*
7. *दयालदास कृत दयालदास री ख्यात, डॉ. दशरथ शर्मा, शार्दुल रिसर्च प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1989*
8. *दयालदास कृत ख्यात देश दर्पण, गिरिजा शंकर शर्मा, राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।*
9. *श्यामलदास दधवाड़िया कृत वीर विनोद, डॉ. रघुवीर सिंह, मनोहर सिंह, शिवदत्त दान, मयंक प्रकाशन, जयपुर, 1986*
10. *जैसलमेर री ख्यात, डॉ. नारायण सिंह भाटी, राजस्थानी शोध संस्थान, चोपासनी, जोधपुर, 1981*
11. *ओझा गौरीशंकर हिराचन्द, जोधपुर राज्य का इतिहास (1,2), जोधपुर 1938, 1941*
12. *भाटी डॉ. हुकम सिंह, संस्कृत व राजस्थानी ऐतिहासिक कृतियों का विवेचन, उदयपुर, 1998*
13. *राणावत मनोहर सिंह, इतिहासकार मुहणोत नैणसी एवं उसके इतिहास ग्रन्थ, जोधपुर, 1983*
14. *शर्मा शिवस्वरूप, राजस्थानी गद्य साहित्य–उद्भव एवं विकास, बीकानेर, 1961*